IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता पर छात्रों और शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण

कृष्ण कुमार सरहान[1] and डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र - विभाग

[2]प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र - विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र

सारांश

शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन विद्यार्थियों के अधिगम, उपलब्धि तथा शिक्षण-प्रक्रिया की गुणवत्ता को मापने का एक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन के साथ-साथ मूल्यांकन की अवधारणाओं में भी व्यापक बदलाव आया है। पारंपरिक परीक्षा-आधारित मूल्यांकन की अपेक्षा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, प्रारूपिक मूल्यांकन तथा परिणाम-आधारित मूल्यांकन को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इस समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों की दृष्टि से मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना है। विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र निष्पक्षता, पारदर्शिता और प्रतिपुष्टि को प्रभावी मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ मानते हैं, जबकि शिक्षक मूल्यांकन को अधिगम सुधार तथा शिक्षण गुणवत्ता बढ़ाने का माध्यम मानते हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि मूल्यांकन प्रणाली की सफलता छात्रों और शिक्षकों दोनों की सकारात्मक धारणाओं पर निर्भर करती है।

मुख्य संकेतक:- मूल्यांकन प्रणाली, छात्र धारणा, शिक्षक धारणा, अधिगम, शैक्षिक गुणवत्ता।

परिचय

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन प्रणाली का महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों को मापने का साधन नहीं है, बल्कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दिशा प्रदान करने वाला उपकरण भी है। पारंपरिक शिक्षा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

व्यवस्था में मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अंक प्रदान करना तथा उन्हें वर्गीकृत करना था, परंतु आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन को अधिगम में सुधार और शिक्षण की तीव्रता बढ़ाने के साधन के रूप में देखा जाता है (ब्लैक एंड विलियम, 1998)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी परीक्षा-आधारित शिक्षा के स्थान पर दक्षता-आधारित और समग्र मूल्यांकन पर बल दिया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि छात्र और शिक्षक वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली को किस प्रकार देखते हैं तथा उनकी धारणाएँ इसकी परिमाण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

मूल्यांकन प्रणाली की अवधारणा

मूल्यांकन प्रणाली (असेसमेंट सिस्टम) शिक्षा प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मूल सिद्धांत है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियाँ, व्यवहार, शिक्षा और समग्र विकास की सुरक्षा के रूप में मूल्यांकन किया जाता है। क्षेत्र में आकलन केवल परीक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक और सतत प्रक्रिया है जो शिक्षण-अधिगम की शिक्षा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आकलन का मुख्य उद्देश्य यह पता चलता है कि शिक्षण के स्थापित दस्तावेजों की आपूर्ति सीमा तक हुई है और छात्रों में किस ज्ञान, कौशल और शिक्षण संस्थानों का विकास हुआ है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में अधिगम को एक अनिवार्य घटक माना जाता है, क्योंकि इसके माध्यम से छात्रों की प्रगति के लिए शिक्षण और शिक्षण के संबंध में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इस प्रकार के आकलन के आधार पर मूल्यों का मापन नहीं किया जाता है, बल्कि यह शिक्षण और सिद्धांत सिद्धांतों को बनाने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है (ब्लूम, 1956)।

समय की अवधारणा के साथ निरंतर विकास हुआ है। प्रारंभिक काल की शिक्षा व्यवस्था में मुख्य रूप से निरीक्षण-दर्शन किया गया था, जहाँ विद्यार्थियों की योग्यता का आकलन केवल वार्षिक या अर्धवार्षिक महाविद्यालयों के माध्यम से किया गया था। इस पारंपरिक दृष्टिकोण में मुख्य ध्यान स्मरण शक्ति और तथ्यात्मक ज्ञान की जांच पर ध्यान रहता था। चतुर्थ आधुनिक शिक्षा दर्शन ने इस दृष्टिकोण को एक व्यापक प्रक्रिया के रूप में सीमित माना और आकलन को परिभाषित किया। आज के आकलन का उद्देश्य केवल यह निर्धारित करना नहीं है कि छात्रों ने किस प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त की हैं, बल्कि यह भी पता है कि वह ज्ञान का प्रयोग किस प्रकार करता है, समस्याओं का समाधान कैसे करता है और उसके व्यक्तित्व और व्यवहार में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

किस प्रकार का विकास हुआ है। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्रों के समग्र विकास का आकलन माना जाता है (टायलर, 1949)।

सिद्धांत प्रणाली की विचारधारा शिक्षण से अंतिम रूप से जुड़ी हुई है। जब किसी स्टार्टअप कार्यक्रम या पाठ्यक्रम के उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं, तब यह आवश्यक है कि उन दस्तावेजों की प्राप्ति का परीक्षण भी किया जाए। आकलन यह कार्य संभावित संरचना है। इस संस्थान की ओर से यह जानकारी दी गई है कि कौन-से छात्र बड़े स्तर तक पहुंच सकते हैं और किन छात्रों को अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त आकलन शिक्षण सामग्री, शिक्षण प्रशिक्षण तथा पाठ्यक्रम की उपयोगिता का भी परीक्षण किया जाता है। यदि विद्यार्थियों का प्रदर्शन मशीनरी स्तर से कम होता है, तो शिक्षक अपने शिक्षण दृष्टिकोण में परिवर्तन कर सकते हैं तथा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं (स्टिगिन्स, 2005)।

शिक्षाशास्त्र के आकलन में केवल समग्रता का मापन शामिल नहीं है, बल्कि यह भावात्मक और मनोक्रियात्मक ढांचे का भी माप है। ब्लूम के स्टार्टअप के अनुसार शिक्षा के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं-संज्ञानात्मक (संज्ञानात्मक), भावात्मक (भावात्मक) और मनोक्रियात्मक (साइकोमोटर)। एक प्रभावशाली मूल्यांकन प्रणाली इन तीन क्षेत्रों में छात्रों की परीक्षाओं का परीक्षण करती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान विषय में केवल आध्यात्म ज्ञान का आकलन नहीं किया जाता है, बल्कि केवल कौशल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समस्या-समाधान क्षमता का आकलन भी आवश्यक होता है (ब्लूम, 1956)।

आकलन प्रणाली के विभिन्न प्रकार हैं, जिनमें गणितीय आकलन (फॉर्मेटिव असेसमेंट), संकलनात्मक आकलन (योगात्मक आकलन), नैदानिक आकलन (नैदानिक आकलन) और सतत एवं व्यापक आकलन (निरंतर और व्यापक मूल्यांकन) प्रमुख हैं। शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किया जाता है और इसका उद्देश्य छात्रों को निरंतर प्रतिपुष्टि प्रदान करना होता है ताकि वे अपनी कमियों को पहचानकर सुधार कर सकें। दूसरी ओर, किसी भी पाठ्यक्रम या सत्र के अंत में संकलन सैद्धांतिक आकलन किया जाता है और इसके उद्देश्य छात्रों के समग्र सम्मेलन का आयोजन होता है। नैदानिक मूल्यांकन छात्रों के विशिष्ट विशिष्ट की पहचान करने में सहायक होता है, जबकि सतत और व्यापक मूल्यांकन छात्रों के शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक दोनों प्रकार के विकास का आकलन करता है (ब्लैक एंड विलियम, 1998)।

आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली का एक महत्वपूर्ण पक्ष प्रतिपुष्टि (फीडबैक) है। प्रभावशाली प्रतिभावान छात्रों को यह संकेत देने में सहायता मिलती है कि उन्होंने क्या अच्छा किया है और उनमें सुधार की आवश्यकता है। शोध अनुसंधान से यह सिद्ध हुआ है कि छात्रों की पढ़ाई में रुचि और सहयोग प्रतिपुष्टि को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हेटी और टिमरली (2007) की प्रतिपुष्टि अधिगम को प्रभावित करने वाला सबसे घटिया रंगों में से एक है। इसलिए आज के मूल्यांकन प्रणाली में केवल एक अंक प्रदान करना पर्याप्त नहीं माना जाता है, बल्कि छात्रों को उनके प्रदर्शन के संबंध में सुसंगत मार्गदर्शन देना भी आवश्यक है।

वर्तमान समय में तकनीकी विकास ने मूल्यांकन प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली तथा स्थिर बना दिया है। डिजिटल आकलन, ऑनलाइन परीक्षण, ई-पोर्टफोलियो और कंप्यूटर आधारित परीक्षण आकलन प्रक्रिया में तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। इन प्रौद्योगिकी के माध्यम से केवल तत्काल परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं, बल्कि विद्यार्थियों को विस्तृत प्रतिपुष्टि भी उपलब्ध करायी जा सकती है। इसके अतिरिक्त तकनीकी उपकरण आकलन प्रक्रिया में सादृश्यता और स्केल वृद्धि में भी सहायक होते हैं (रेडेकर और जोहानिसन, 2013)। कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन मूल्यांकन का व्यापक उपयोग इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक शिक्षा में वर्गीकृत आधारों की भूमिका में निरंतर वृद्धि हो रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी व्यापक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। नीति के अनुसार पारंपरिक रतन शिक्षा और निरीक्षण-दर्शक दृष्टिकोण को शोरूम-आधारित, कौशल-आधारित और अधिगम-दर्शक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि छात्रों का उद्देश्य उद्देश्यपूर्ण नहीं होना चाहिए, बल्कि उनकी सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना चाहिए। इसके लिए स्थापत्य में नियमित, मूलनिवासी और बहुजातीय आदर्शों को लागू करने का सिद्धांत दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

अंततः कहा जा सकता है कि मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह न केवल छात्रों की सलाह का सारांश है, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को और भी अधिक प्रभावी और प्रभावी बनाया गया है। एक आदर्श मूल्यांकन प्रणाली वह है जो मान्य, विश्वसनीय, वैध, स्थिर और अधिगम-दर्शक हो। ऐसे संस्थान छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देता है, शिक्षण को सुधार के अवसर प्रदान करता है और शिक्षा के व्यापक छात्रों को शिक्षा में सहायता प्रदान करता है। इसलिए आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आकलन को केवल एक परीक्षण की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।

मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से छात्रों की संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक उपलब्धियों का आकलन किया जाता है। ब्लूम (1956) के अनुसार, मूल्यांकन वह प्रक्रिया है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

जिससे यह निर्धारित किया जाता है कि शिक्षण के उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त किया गया है।मूल्यांकन के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं—

मूल्यांकन का प्रकार	उद्देश्य
प्रारूपिक मूल्यांकन	अधिगम में सुधार हेतु निरंतर प्रतिपुष्टि
संकलनात्मक मूल्यांकन	अंतिम उपलब्धि का आकलन
नैदानिक मूल्यांकन	कठिनाइयों की पहचान
सतत एवं व्यापक मूल्यांकन	समग्र विकास का मूल्यांकन

छात्रों की मूल्यांकन प्रणाली के प्रति धारणा

विभिन्न आकारों से ज्ञात होता है कि छात्र ऐसी मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी मानते हैं जो निष्पक्ष, अनियमित तथा अधिगम-निर्धारित हो (ब्राउन एवं हिर्शफिल्ड, 2008)।

छात्रों की प्रमुख धारणाएँ निम्न प्रकार हैं: -

निष्पक्षता और पारदर्शिता

छात्रों का मानना है कि मूल्यांकन प्रक्रिया स्पष्ट एवं निष्पक्ष होनी चाहिए। जब मूल्यांकन मानदंड पहले से स्पष्ट होते हैं, तब विद्यार्थियों में विश्वास बढ़ता है (सैडलर, 1989)।

प्रतिपुष्टि का महत्व

प्रभावी प्रतिपुष्टि विद्यार्थियों को अपनी कमियों को समझने और सुधार करने में सहायता करती है। हैटी और टिम्परली (2007) के अनुसार बिस्कुट प्रतिपुष्टि अधिगम गतिविधियों को महत्वपूर्ण रूप से पास्ता है।

परीक्षा तनाव

कई शोधों में पाया गया है कि परीक्षा-आधारित मूल्यांकन छात्रों में तनाव और चिंता उत्पन्न करता है, जिससे उनकी वास्तविक क्षमता का सही आकलन नहीं हो पाता (पुटवेन, 2008)।

शिक्षकों की मूल्यांकन प्रणाली के प्रति धारणा

शिक्षक मूल्यांकन को केवल उपलब्धि मापन का साधन नहीं बल्कि शिक्षण सुधार का माध्यम मानते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

शिक्षण गुणवत्ता में सुधार

शिक्षकों का मानना है कि मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर शिक्षण रणनीतियों में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं (ब्रुकहार्ट, 2011)।

अधिगम अंतराल की पहचान

मूल्यांकन विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कठिनाइयों की पहचान करने में सहायक होता है, जिससे व्यक्तिगत सहायता प्रदान की जा सकती है (स्टिगिन्स, 2005)।

प्रशासनिक दबाव

कई शिक्षक मानते हैं कि अत्यधिक परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था उनके नवाचारपूर्ण शिक्षण को सीमित करती है (हार्लेन, 2007)।

छात्रों एवं शिक्षकों की धारणाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

आयाम	छात्रों की धारणा	शिक्षकों की धारणा
निष्पक्षता	अत्यंत महत्वपूर्ण	महत्वपूर्ण
प्रतिपुष्टि	सुधार हेतु आवश्यक	शिक्षण सुधार का साधन
परीक्षा तनाव	प्रमुख समस्या	सीमित चिंता
अधिगम सुधार	मूल्यांकन का उद्देश्य होना चाहिए	मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य
पारदर्शिता	उच्च अपेक्षा	प्रशासनिक आवश्यकता

मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारक

मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, जो न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रक्रिया का कार्य करता है, बल्कि शिक्षण-अधि प्रक्रिया की गुणवत्ता भी प्रदर्शित करता है। किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता इस पर निर्भर करती है कि उसका आकलन बात प्रणाली कितनी प्रभावी, विश्वसनीय और उद्देश्यपूर्ण है। प्रभावी आकलन प्रणाली शिक्षण के वास्तविक क्षमता, ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों का सही आकलन करने में सक्षम होती है, जबकि सशक्त आकलन प्रणाली शिक्षण के प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आकलन प्रणाली के लक्षण कई व्यक्तित्वों से प्रभावित होते हैं, आकलन के उद्देश्य, मूल्यांकन के उपकरण, शिक्षक, शिक्षक, शिक्षक की शिक्षा, छात्रों की प्रशिक्षण, प्रतिपुष्टि व्यवस्था और तकनीकी के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

वैज्ञानिक प्रमुख हैं (ब्लैक एंड विलियम, 1998)। इन सभी प्रशिक्षणों का समन्वित रूप से कार्य करना आवश्यक है ताकि मूल्यांकन प्रणाली वास्तव में शिक्षण और अधिगम को बढ़ावा दे सके।

मूल्यांकन प्रणाली की परिभाषाओं को प्रभावित करने वाला पहला महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रणाली की परिभाषाएँ स्पष्ट हैं। यदि आकलन के उद्देश्य स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं किए गए हैं, तो आकलन प्रक्रिया के आधार पर परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकेंगे। मूल्यांकन का उद्देश्य केवल छात्रों को प्रवेश देना या उन्हें नियुक्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उनके अधिगम स्तर, सीखने की सीख और प्रगति का पता लगाना भी होना चाहिए। जब शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के बीच के मूल्यों को समाहित करते हैं, तब मूल्यांकन अधिक सार्थक और उपयोगी बन जाता है (पोफम, 2017)। उद्देश्य के आधार पर विद्यार्थियों को सीखने की दिशा और आवश्यक सुधारों को समझने में सहायता प्रदान की जाती है।

मूल्यांकन उपकरण की गुणवत्ता भी इसकी दोस्ती का एक प्रमुख निर्धारक है। प्रश्नपत्र, प्रोजेक्ट कार्य, अमूर्त मूल्यांकन, प्रदर्शन आधारित परीक्षण और अन्य मूल्यांकन का निर्माण वैज्ञानिक और उद्देश्यपरक होना चाहिए। यदि मूल्यांकन उपकरणों के दस्तावेजों के मानक नहीं हैं, तो छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं का सही माप नहीं हो सकता है। वैधता (वैधता) और विश्वसनीयता (विश्वसनीयता) किसी भी मूल्यांकन उपकरण की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन अनुपात उसके लिए रखा जा रहा है, जबकि पिक्सेल निर्मित स्थिरता और स्थिरता को प्रभावित करता है (निट्को और ब्रुकहार्ट, 2014)। प्रभावी मूल्यांकन प्रणाली के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण का विकास अत्यंत आवश्यक है।

सहयोगियों और सहयोगियों के लिए भी महत्वपूर्ण कारक हैं। यदि छात्रों को यह विश्वास हो कि मूल्यांकन अनुपात और अनुपयुक्त है, तो उन्हें अधिक मूल्यांकन मूल्यांकन और अन्य मूल्यांकन मूल्यांकन में भाग लेना है। मूल्यांकन के समग्र, अंकन प्रक्रिया और लक्ष्यों की घोषणा में स्थापना बनाए रखना आवश्यक है। जब आकलन प्रक्रिया में पूर्व निर्धारित, भेदभाव या अज्ञातता होती है, तो छात्रों का विश्वास कम हो जाता है और मूल्यांकन का सिद्धांत प्रभावित होता है (ब्राउन और हिर्शफेल्ड, 2008)। छात्रों के छात्रों में समान अवसर की भावना विकसित होती है और उनकी प्रेरणा को पुनः प्राप्त किया जाता है।

अस्सिटेंट की योग्यता और एलेमिक एसोसिएटेड यूनिवर्सिटी का भी मूल्यांकन प्रणाली की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक ही मूल्यांकन प्रक्रिया की योजनाएँ तोड़ते हैं, उपकरण तैयार करते हैं, परिणामों का विश्लेषण करते हैं और छात्रों को प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। यदि शिक्षक आधुनिक सिद्धांतों और सिद्धांतों से अज्ञात हैं, तो मूल्यांकन की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। संस्थागत के लिए नियमित प्रशिक्षण और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है ताकि वे नए आकलन कार्यान्वयन को प्रभावी ढंग से लागू कर सकें (ब्रुकहार्ट, 2011)। शिक्षक-शिक्षिकाओं की आवश्यकताओं के मानक आकलन तैयार किए जा सकते हैं और उनके अधिगम में सुधार के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान किए जा सकते हैं।

छात्रों की सक्रियता भी मानक प्रणाली की शिक्षा को बढ़ाने में सहायक होती है। आधुनिक शिक्षा में छात्रों को केवल मूल्यांकन प्रक्रिया का विषय नहीं माना जाता है, बल्कि उनके मूल्यांकन प्रक्रिया को सक्रिय करना माना जाता है। स्व-मूल्यांकन (स्व-मूल्यांकन) और सहपाठी आकलन (पीयर असेसमेंट) जैसी प्रक्रियाएं छात्रों को अपने सीखने के प्रति अधिक जिम्मेदार भूमिका निभाती हैं। जब विद्यार्थी आकलन प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तब वे अपनी शक्तियों और शक्तियों को बेहतर ढंग से समझते हैं और आत्म-नियंत्रित अधिगम की दिशा में विघटन होते हैं (अर्ल, 2003)। इस आकलन का एकमात्र परिणाम प्राप्त करने का साधन और सीखना एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है।

प्रभावी प्रतिपुष्टि (प्रतिक्रिया) आकलन प्रणाली का एक अनिवार्य तत्व है। प्रतिपुष्टि विद्यार्थियों का कहना है कि उन्होंने अच्छा किया और क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है। केवल अंक प्रदान करने की सुविधा नहीं है; छात्रों को उकसाना और अपमानित करना प्रतिपुष्टि भी मिलनी चाहिए। हैटी और टिमपर्ले (2007) के अनुसार प्रभावशाली प्रतिपुष्टि छात्रों की भर्ती में महत्वपूर्ण सुधार हो सकता है। जब प्रतिपुष्टि स्पष्ट, विशिष्ट और विकासोन्मुख होती है, तब विद्यार्थी अपनी ताकत बनाए रखते हैं और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित होते हैं। इसलिए प्रतिपुष्टि की गुणवत्ता आकलन प्रणाली की दोस्ती का एक महत्वपूर्ण संकेत है।

प्रौद्योगिकी के दस्तावेज़ और उनके उपयोग से भी आधुनिक मूल्यांकन प्रणाली प्रभावित होती है। डिजिटल स्केलेटन आकलन के क्षेत्र में कई नए अवसर प्रदान किए गए हैं। ऑनलाइन परीक्षण, कंप्यूटर आधारित परीक्षण, लिंक किए गए सिस्टम और सांख्यिकीय उपकरण आकलन प्रक्रिया को अधिक प्रबल, स्थिर और प्रभावशाली झटका दिया जाता है। तकनीकी माध्यम से प्राप्त डेटा का विश्लेषण छात्रों की प्रगति और सामग्री को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है (रेडेकर और जोहानसन, 2013)। हालाँकि तकनीकी शैक्षिक योग्यता की कमी या डिजिटल मानक मूल्यांकन की कमी भी सीमित हो सकती है।

स्टार्ट-अप पर्यावरण और स्तर का समर्थन भी मूल्यांकन प्रणाली की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यदि स्कूल या कॉलेज में मूल्यांकन को केवल प्रभाव प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, तो उसका वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं होता। इसके विपरीत, जब संस्थान के आकलन को अधिगम सुधार का साधन माना जाता है और इसके लिए आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण और औद्योगिक सहायता प्रदान की जाती है, तब आकलन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

अधिक प्रभावशाली हो जाता है। सकारात्मक स्टार्टअप छात्र-छात्राओं और शैक्षणिक संस्थानों को मूल्यांकन प्रक्रिया में सक्रिय और उत्साहजनक भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाता है।

अंततः, एस्टीमेट सिस्टम के कई समानता संबंधित छात्र-छात्राओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। स्पष्ट उद्देश्य, गुणवत्तापूर्ण मूल्यांकन उपकरण, उपकरण, उपकरण, प्रशिक्षण शिक्षक, सक्रिय कार्यकर्ता तकनीशियन, प्रभावशाली प्रतिपुष्टि, तकनीकी संसाधन और प्रयोगशाला सहयोग समूह एक ऐसे मूल्यांकन प्रणाली का निर्माण करते हैं जो केवल छात्रों की आवश्यकताओं का सही मूल्यांकन नहीं करता है, बल्कि उनके समग्र विकास को भी प्रमाणित करता है। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि आकलन को केवल परीक्षण और सीमित तक सीमित न किया जाए, उसे अधिगम-सुधार और कौशल-विकास के एक समूह उपकरण के रूप में विकसित किया जाए। समान विचारधारा से व्यावहारिक प्रणाली वास्तव में प्रभावी, सार्थक और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की भर्ती बन सकती है।

1. पारदर्शी मूल्यांकन मानदंड

स्पष्ट मानदंड छात्रों में विश्वास बढ़ाते हैं और निष्पक्षता सुनिश्चित करते हैं

2. तकनीकी एकीकरण

डिजिटल मूल्यांकन प्रणालियाँ त्वरित परिणाम और विस्तृत प्रतिपुष्टि प्रदान करती हैं

3. सतत मूल्यांकन

निरंतर मूल्यांकन विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है तथा परीक्षा-आधारित दबाव को कम करता है

प्रमुख शोध अध्ययनों की समीक्षा

लेखक	वर्ष	प्रमुख निष्कर्ष
ब्लैक और विलियम	1998	प्रारूपिक मूल्यांकन अधिगम में सुधार करता है
ब्राउन और हिर्शफिल्ड	2008	छात्र निष्पक्षता को सर्वोच्च महत्व देते हैं
हैटी और टिम्परली	2007	प्रभावी प्रतिपुष्टि से उपलब्धि बढ़ती है
स्टिगिन्स	2005	मूल्यांकन अधिगम को प्रोत्साहित करता है
हार्लेन	2007	परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था शिक्षण को प्रभावित करती है
ब्रुकहार्ट	2011	मूल्यांकन शिक्षण गुणवत्ता सुधार का उपकरण है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

चर्चा

समीक्षित साहित्य से स्पष्ट होता है कि मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता केवल परीक्षा परिणामों से नहीं आँकी जा सकती। छात्रों के लिए निष्पक्षता, पारदर्शिता तथा प्रतिपुष्टि महत्वपूर्ण हैं, जबकि शिक्षक इसे शिक्षण सुधार एवं अधिगम वृद्धि का साधन मानते हैं। दोनों समूहों की धारणाओं में कुछ समानताएँ और कुछ भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यदि मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाना है, तो उसमें सतत मूल्यांकन, डिजिटल तकनीकों तथा रचनात्मक प्रतिपुष्टि को सम्मिलित करना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। छात्रों और शिक्षकों की सकारात्मक धारणाएँ इसकी प्रभावशीलता को बढ़ाती हैं। समीक्षा अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि एक प्रभावी मूल्यांकन प्रणाली वह है जो निष्पक्ष, पारदर्शी, अधिगम-केंद्रित तथा प्रतिपुष्टि-आधारित हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप मूल्यांकन को परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से हटाकर दक्षता-आधारित एवं समग्र विकासोन्मुख बनाना समय की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. अर्ल, एल. (2003). असेसमेंट एज़ लर्निंग: यूज़िंग क्लासरूम असेसमेंट टू मैक्सिमाइज़ स्टूडेंट लर्निंग. कॉर्विन प्रेस.
2. निटको, ए. जे., और ब्रुकहार्ट, एस. एम. (2014). एजुकेशनल असेसमेंट ऑफ़ स्टूडेंट्स. पियर्सन एजुकेशन.
3. पॉपहम, डब्ल्यू. जे. (2017). क्लासरूम असेसमेंट: व्हाट टीचर्स नीड टू नो. पियर्सन.
4. ब्राउन, जी. टी. एल., और हिर्शफेल्ड, जी. एच. एफ. (2008). स्टूडेंट्स कॉन्सेप्शन ऑफ़ सेसमेंट. असेसमेंट इन एजुकेशन, 15(1), 3–17.
5. ब्रुकहार्ट, एस. एम. (2011). एजुकेशनल असेसमेंट नॉलेज एंड स्किल्स फॉर टीचर्स. एजुकेशनल मेज़रमेंट, 30(1), 3–12.
6. ब्लैक, पी., और विलियम, डी. (1998). असेसमेंट एंड क्लासरूम लर्निंग. असेसमेंट इन एजुकेशन, 5(1), 7–74.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

7. रेडेकर, सी., और जोहानसेन, Ø. (2013). चेंजिंग असेसमेंट—टुवर्ड्स ए न्यू असेसमेंट पैराडाइम यूज़िंग ICT. यूरोपियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, 48(1), 79–96.
8. हैटी, जे., और टिम्परली, एच. (2007). द पावर ऑफ़ फीडबैक. रिव्यू ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 77(1), 81–112